कभी ना करना अपने पुरुषार्थ पर इतना भी अभिमान
देह अभिमान हार खिला ही देगा अकाले मृत्यु समान
बस एक पल की असावधानी से माया जाती है जीत
बुद्धि पलटकर हमारी तुड़वाती देती है बाबा से प्रीत
छा जाते हैं फिर बुद्धि के आगे अज्ञान के बादल काले
कठिन है सम्भलना कोई कितना भी खुद को सम्भाले
मायावी आकर्षण हमें तरह तरह के रूपों से ललचाए
भौतिक आकर्षण का मकड़जाल हमको बड़ा उलझाए
अलबेलापन करता है हमारे पुरुषार्थ को ढ़ीला इतना
सो जाते हैं अज्ञान निद्रा में सोता है कुम्भकर्ण

जितना
काम क्रोध से बन जाता हमारा चेहरा पिला और लाल
चरित्रहीन बनाकर बिगाड़ता हमारी चलन और चाल
अपनाओ ऐसी युक्ति जो इस चक्रव्यूह से हम निकलें
बाबा की श्रीमत को अपनाकर खुद को पूरा ही बदलें
घर जाने का संकल्प सदा हमारे मन में चलता जाए
देह अभिमान का संकल्प खींचकर नीचे ना ले आए
सारे दिन में जो खेला है हमने सुकर्म विकर्म का खेल
सोने से पहले बाबा को देना है उन सबका पोता मेल
बाबा को अपना चार्ट देकर बुद्धि से हल्के हो जाना

नहीं दोहराएंगे विकर्म कोई कसम ये बाबा से खाना
अकाल तख्त नशीन होने का अभ्यास बढ़ाते जाना
अपने मन में ज्ञान गुण शक्तियां संचित करते जाना
देवी गुण धारण कर स्थापना की करनी है तैयारी
माया रावण को जीतने की बढ़ाते जाओ होशियारी
अपने मन बुद्धि में भरते जाओ शुद्ध ज्ञान का पेट्रोल
तभी सहज लगाना आएगा व्यर्थ पर पूर्ण कण्ट्रोल
हर किसी भी बात पर अब क्वेश्चन मार्क नहीं लगाना
व्यर्थ सोचकर अपने मन बुद्धि को भारी नहीं बनाना
एक रस स्थिति का अपनाकर कर लो अपना

सुधार
अशरीरीपन के सतत अभ्यास से होगा हमारा उद्धार
ॐ शांति